स्वामित्व और ज़िम्मेदारी का बोध

स्कूल संस्कृति का एक बेहद महत्त्वपूर्ण पहलू

शोभन सिंह नेगी

मुझे कई स्कूलों का अवलोकन करने और उन्हें समझने का अवसर प्राप्त हुआ। इससे मुझे यह समझ में आया कि किसी स्कूल के अच्छे होने व बच्चों के ख़ुश होने तथा उनके अच्छी तरह से सीखने का कारण उस स्कूल के वातावरण या उसकी संस्कृति का 'अलग' होना होता है। इस संस्कृति का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू स्वामित्व और ज़िम्मेदारी का वह एहसास है जो विद्यार्थियों, शिक्षकों और माता-पिता का उस स्कूल के प्रति होता है। यह लेख ऐसी कुछ ख़ास विशिष्टताओं की चर्चा करता है जो ऐसे स्कूलों में आमतौर से पाई जाती हैं।

अपने विद्यार्थियों को जानना

पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि इन स्कूलों के शिक्षक अपने विद्यार्थियों की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के बारे में अच्छी समझ रखते हैं। वे अपने विद्यार्थियों का नाम लेकर पुकारते हैं और ऐसे भयमुक्त वातावरण का निर्माण करते हैं जहाँ विद्यार्थी उनके साथ बहुत सहज तरीक़े से संवाद करते हैं। शिक्षक यह सुनिश्चित करते हैं कि विद्यार्थियों का सामाजिक स्तर स्कूल में उनके व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित न करे और न ही उनके सीखने को बाधित करे।

ऐसे स्कूलों में शिक्षक यह भी जानते हैं कि उनके विद्यार्थी अपनी कक्षाओं से कब और क्यों अनुपस्थित रहते हैं। वे सीधे माता-पिता से मिलते हैं और यह मिलना-जुलना बहुत स्वतःस्फूर्त और सहज होता है। शिक्षक उन समस्याओं के प्रति भी जागरूक और संवेदनशील होते हैं जिनका सामना माता-पिता कर रहे होते हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि में यह देखा गया है कि बच्चे फ़सल कटाई और बुआई के मौसम में अपने घर में हाथ बटाते हैं। जब बच्चे अपनी कक्षाओं से अनुपस्थित रहते हैं तब शिक्षक अतिरिक्त समय देकर उन बच्चों की मदद करते हैं।

ऐसे शिक्षक विद्यार्थियों की भाषा/बोली, खानपान की आदतों, जीवन की दशाओं और परिस्थितियों के प्रति अच्छी समझ रखते हैं और उनके प्रति संवेदनशील होते हैं। वे स्थानीय भाषा समझने का प्रयास करते हैं और यह समझने का प्रयास करते हैं कि विद्यार्थी स्थानीय चीज़ों, परिस्थितियों, अभिव्यक्तियों व भावनाओं का किस तरह उल्लेख करते हैं।

सक्रिय रूप से सीखना

दूसरा पहलू जो देखा जा सकता है वह यह है कि इन स्कूलों में बच्चे ख़ुद के सीखने के प्रति ज़िम्मेदारी को स्वीकार करते हैं। उन्हें सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान एक-दूसरे की पुरज़ोर मदद करते हुए देखा जा सकता है। शिक्षक कक्षा में एक ऐसा वातावरण रचते हैं, जहाँ विद्यार्थी एक-दूसरे से सीखते हैं।

मुझे यह भी एहसास हुआ है कि इन स्कूलों के शिक्षक विद्यार्थियों की रुचियों के बारे में गहरी समझ रखते हैं और हर एक की विशिष्टताओं को भी समझते हैं। वे अपनी कक्षाओं के लिए जो पाठ योजनाएँ तैयार करते हैं, वे इसी समझ पर आधारित होती हैं। वे यह भी जानते हैं कि उनके विद्यार्थियों के सीखने के स्तर वास्तव में क्या हैं और इसी आधार पर विद्यार्थियों के समूह बार-बार बनाए जाते हैं।

ऐसे शिक्षक यह सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय तरीक़े से काम करते हैं कि बच्चे ख़ुद की ज़िम्मेदारी लेना सीख सकें, ज़िम्मेदार व्यक्ति बन सकें, नेतृत्व के गुण विकसित कर सकें और शारीरिक व मानसिक रूप से मज़बूत हो सकें। यह भी देखा जा सकता है कि इन स्कूलों में विद्यार्थियों का अपने शिक्षकों के साथ बहुत सरल रिश्ता होता है और वे अपने शिक्षकों की संगत पसन्द करते हैं। अकसर उन्हें अपनी नोटबुक/वर्कबुक के साथ शिक्षकों से यह कहते हुए देखा जा सकता है कि वे उन्हें और काम करने को दें।

माता-पिता की अपेक्षाओं को पूरा करना

तीसरा पहलू जो मैंने समझा वह यह है कि ऐसे स्कूलों के शिक्षकों को माता-पिता की अपेक्षाओं की गहरी पकड़ होती है और इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए वे अपने विद्यार्थियों के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बहुत कठिन परिश्रम और प्रयास करते हैं। वे माता-पिता/ अभिभावकों के साथ नियमित रूप से मासिक और त्रैमासिक बैठक करते हैं और अपनी यह ज़िम्मेदारी समझते हैं कि स्कूल में उनके बच्चे जो सीख रहे हैं उसकी जानकारी उन्हें दी जाए। अकसर, वे उन्हें यह भी बताते हैं कि बच्चे पर किस जगह विशेष ध्यान देने की

ज़रूरत है। ऐसी मौजूदा ज़रूरतों और मुद्दों पर भी चर्चा की जाती है जिसकी चिन्ता माता-पिता को होती है, जैसे उनकी यह इच्छा कि उनके बच्चे अँग्रेज़ी सीखें। स्कूल में माता-पिता का सहयोग विभिन्न तरीक़ों से दिखाई देता है, उदाहरण के लिए, स्कूल भवन के निर्माण और इसके रखरखाव (आस-पास के स्थान को सुन्दर बनाना) में।

संवैधानिक मूल्यों के प्रति जुड़ाव

चौथा पहलू जो मैंने समझा वह यह है कि हमारे गाँव के समाजों में बहुत-सी सामाजिक समस्याएँ भी हैं, जैसे जाति और लिंग का भेदभाव या दूसरे धर्म व आर्थिक रूप से कमज़ोर समुदायों के प्रति पूर्वाग्रह। ऐसे स्कूलों में शिक्षक इस बात को महसूस करते प्रतीत होते हैं कि शैक्षिक संस्थान हमारे संवैधानिक मूल्यों से बँधे हुए हैं और स्कूल का उद्देश्य संवेदनशील और अच्छे (बेहतर) नागरिक विकसित करना तथा ऐसा वातावरण बनाना है जो भेदभाव से मुक्त हो। इसकी अच्छी समझ शिक्षकों के विचारों और उनके व्यवहारों में देखी जा सकती है। अतः, स्कूलों में उनके द्वारा कराए गए सभी कार्य भेदभाव से मुक्त होते हैं। वे इसकी चर्चा बच्चों के माता-पिता से भी करते हैं। शिक्षकों के इन प्रयासों का प्रभाव बच्चों के माता-पिता में सकारात्मक बदलाव और फलतः समाज में सकारात्मक बदलाव के रूप में देखा जा सकता है।

बुनियादी कौशलों पर ध्यान केन्द्रित करना

पहचाना जा सकने वाला पाँचवाँ महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि ऐसे स्कूलों में शिक्षक रटाकर सिखाने की बजाय अपने विद्यार्थियों के बुनियादी कौशलों और अवधारणों की समझ पर केन्द्रित करते हैं। रेखांकित करने वाली बात यह है कि मैंने ऐसे स्कूलों में यह पाया कि ये शिक्षक स्पष्ट रूप से इस बात को समझते हैं कि पढ़ना और लिखना, सोचना-विचारना, कल्पना और तर्क आदि वे कौशल हैं जिससे वह बुनियाद तैयार होती है जिस पर यह शिक्षा टिकी होती है। अतः इन स्कूलों में ऐसे कौशलों के निर्माण पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है।

मैंने यह भी पाया कि इन स्कूलों में बच्चे सीखने के प्रति उत्साहित रहते हैं और पढ़ने-लिखने में उनकी रुचि होती है। बच्चे अपने विचारों को बिना डर और हिचकिचाहट के रखते हैं। शिक्षक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सीखने की ज़िम्मेदारी प्रत्येक विद्यार्थी की ही होती है और शिक्षक इस प्रक्रिया में महज मदद देने के लिए ही होता है। इन कक्षाओं में इन बच्चों को प्रायः यह कहते हुए सुना जा सकता है कि, "सर/ मैडम, हम अब आगे क्या पढ़ें? हम क्या लिखें? क्या हम अगला पाठ पढ़ें?" आदि। मैंने यह कभी नहीं सुना कि शिक्षकों ने कहा हो कि वे पढ़ाने से थक गए हैं। मैंने यह भी देखा है कि जब इन स्कूलों में छुट्टी होती है तब विद्यार्थी घर जाने की जल्दी में नहीं होते।

विद्यार्थियों का स्वामित्व बोध

पिछली बात मुझे छठवें पहलू पर ले आई है जो यह है कि बच्चों की इन स्कूलों के संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। स्कूल की व्यवस्था, रोज़ाना की प्रार्थना-सभा, खेल, स्कूल में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों और राष्ट्रीय त्योहारों/उत्सवों के आयोजन में विद्यार्थियों की भागीदारी महत्त्वपूर्ण है। यहाँ बच्चों में स्कूल के प्रति एक अपनेपन का बोध होता है और इसी कारण इन स्कूलों में भवन साफ़-सुथरे, व्यवस्थित और सुरक्षित नज़र आते हैं। मैं प्रायः कई शिक्षकों को यह कहते हुए पाता हूँ कि गाँव के कुछ असामाजिक तत्व स्कूल बन्द होने के बाद स्कूल परिसर का दुरुपयोग करते हैं। लेकिन इन स्कूलों में विद्यार्थी और उनके माता-पिता इस पर तीखी नज़र रखते हैं और स्कूली भवनों को साफ़ और सुरक्षित रखने में अपनी ज़िम्मेदारी को समझते हैं। विद्यार्थी और उनके अभिभावक यह महसूस करते हैं कि स्कूल वह सम्पत्ति है जो उनके गाँव के समुदाय के हिस्से के तौर पर उनकी है और उसे सुरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी उन्हीं की है।

स्कूल प्रमुख का नेतृत्व

सातवाँ पहलू है ऐसे स्कूलों में स्कूल प्रमुख की भूमिका और उनका सक्षम नेतृत्व। स्कूल प्रमुख शिक्षा के उद्देश्य और लक्ष्य के बारे में एकदम स्पष्ट होते हैं। वे मानते हैं कि उनकी ज़िम्मेदारी बच्चों को विभिन्न विषय पढ़ाना भर नहीं है, बल्कि अच्छे नागरिक और एक बेहतर समाज बनाना भी उनका काम है। बच्चों के साथ उनके संवाद बहुत सहज और स्वतः स्फूर्त होते हैं। वे बच्चों से बहुत प्यार से पेश आते हैं और उन्हें समय-समय पर सलाह देते रहते हैं।

वे ख़ुद को स्कूल के लिए एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं और शिक्षकों के साथ दोस्ताना लेकिन पेशेवर रिश्ता बनाते हैं। वे इस बात को ध्यान में रखते हैं कि उन्हें शिक्षकों को ज़रूरी सुविधाएँ मुहैया करानी हैं ताकि शिक्षक अपने शिक्षण कार्यों को ख़ुशी-ख़ुशी पूरा कर सकें। वे शिक्षकों के सामने शिक्षण के दौरान आने वाली समस्याओं के प्रति सचेत रहते हैं और अगर ज़रूरत होती है तो वे इन्हें हल करने के लिए सम्बन्धित विभागों और संस्थाओं की सहायता भी लेते हैं।

ये स्कूल प्रमुख नियमित रूप से स्कूल का निरीक्षण भी करते हैं ताकि वे बच्चों के सीखने के स्तर से अवगत रहें। वे विद्यार्थियों को स्कूल, ब्लॉक व ज़िला स्तरों पर विभिन्न खेलों और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भागीदारी करने और अच्छा प्रदर्शन करने के अवसर प्रदान करते हैं। यह स्पष्ट है कि जब

स्कूलों का प्रदर्शन अच्छा होता है तब अभिभावक भी स्कूल के साथ एक सहज जुड़ाव महसूस करते हैं और वे स्कूल की हर सम्भव मदद करने के लिए उत्सुक रहते हैं।

इन स्कूलों में विभिन्न स्थलों के कार्यान्वयन पर उचित ध्यान दिया जाता है, जैसे स्कूल की सभा, बच्चों का पुस्तकालय, बच्चों के भोजन व बैठने की व्यवस्था और खेलों के लिए उपकरण। इसके साथ ही परिसर को साफ़ रखने और उसे सुन्दर बनाने पर भी ध्यान दिया जाता है।

शिक्षकों में टीम भावना

अन्तिम चीज़ जो मुझे समझ में आती है वह यह है कि इन स्कूलों में शिक्षक एक टीम के रूप में साथ काम करते हैं। एक विषय पढ़ाने में एक शिक्षक अपना व्यक्तिगत प्रयास कर सकता है, लेकिन जब पूरा स्कूल एक ज़िम्मेदार संगठन के तौर पर साथ काम करता है तब स्थितियाँ काफ़ी बेहतर हो जाती हैं। जब शिक्षक स्कूल के प्रति ज़िम्मेदारी और अपनेपन का भाव रखते हैं तब वे विद्यार्थियों के चौतरफ़ा विकास की दिशा में काम करते हैं; और वे अपने दिमाग़ में शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों को ध्यान में रखकर काम करते हैं। इस कारण से इन स्कूलों में विद्यार्थियों को सीखते हुए देखा जा सकता है। वे बहुत उत्सुकता के साथ स्कूलों की सभी गतिविधियों में भी भाग लेते हैं। विद्यार्थी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करते हैं और उनके अन्दर अपने स्कूल के प्रति अपनेपन की एक गहरी भावना होती है। इन स्कूलों में शिक्षा विभाग के अधिकारियों का सहयोग भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

शोभन सिंह नेगी उत्तराखण्ड राज्य में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन द्वारा किए जाने वाले कार्य के प्रमुख हैं। वह 2010 से फ़ाउंडेशन के साथ हैं। उत्तराखण्ड से पहले उन्होंने आठ साल बाड़मेर, राजस्थान में काम किया था। उनसे shobhan@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनीष आज़ाद **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

कोई भी रीति हमेशा ही कुछ बुनियादी मूल्यों से निकलती है। उदाहरण के लिए, जब कोई स्कूल सुबह की सभा में कोई धर्मनिरपेक्ष प्रार्थना शामिल करने का निर्णय लेता है, तो वह दर्शाता है कि वह धर्मनिरपेक्षता और समावेश को महत्त्व देता है। अगर कुछ स्कूल सुबह की सभा में प्रार्थनाओं की जगह राष्ट्र के प्रति संकल्प को शामिल करते हैं, तो वे यह दर्शा रहे होते हैं कि वे देशभक्ति को किसी भी धार्मिक सम्बद्धता पर तरजीह देते हैं।

- स्कूल संस्कृति की प्रकृति और उद्देश्य, प्रकाश अय्यर, पेज 7